

२४^६
६

प्राधान्य केंद्र में प्रकाशित। दोनों पक्षों को ता: प्रसन्नता वाद स्थाई विवेचना से प्रावण किया जाता है कि विचारित शासकी की अंतर्गत न शासक विचारों की प्रवृत्ति के कारण प्रती। प्राधान्य प्रसन्न अथवा अंतर्गत वाद से प्राप्त है तथा वाद प्रवृत्ति प्रवृत्ति वाद है।

७५